APPENDICES

[illegible] - सं. 1

अभिवृत्ति - मापन APPENDIX-I

नाम ______________ पिता का नाम ______________

विद्यालय ______________ कक्षा व वर्ग ______________

घर का पता ______________

जन्म तिथि ______________ दिनांक ______________

प्राप्तांक

खण्ड 1	खण्ड 2	खण्ड 3	योग

निर्देश -

1- इस पुस्तिका में कुछ कथन दिये गये हैं। इनके बारे में तुम्हें अपना मत व्यक्त क

2- प्रत्येक कथन के सामने [1] पूर्णतः सहमत [2] सहमत [3] अनिश्चित [4] असहमत [5] पूर्णतः असहमत के लिये पाँच खाने दिये हुये हैं। इनमें से कि एक खाने में सही [✓] का निशान लगाकर तुम्हें अपना मत व्यक्त करना है। तुम किसी कथन से पूर्णतः सहमत अर्थात् शत-प्रतिशत सहमत हो तो उस कथन के सामने पूर्णतः सहमत के खाने में सही [✓] का निशान लगा दो। इसी प्रकार केवल सहमत अर्थात् शत-प्रतिशत सहमत न होकर कुछ कम सहमत होने पर सहमत के खाने में सही [✓] का निशान लगा दो। अनिश्चित अर्थात् कथन के बारे में कोई निश्चित राय न होने पर अनिश्चित के खाने में सही [✓] का निशान लगा दो। यदि कथन से असहमत अर्थात् शत-प्रतिशत असहमत न होकर कुछ कम असहमत हो तो असहमत के खाने में सही [✓] का निशान लगा दो और यदि पूर्णतः असहमत अर्थात् शत-प्रतिशत असहमत हो तो असहमत के खाने में सही का निशान लगा दो।

3- हर व्यक्ति अलग-अलग अपने तरीके से सोचता विचारता है। अतः किसी विचार से सहमत या असहमत होने में सही या गलत होने का प्रश्न नहीं उठता।

4- तुम्हें अपना मत निर्भीक होकर स्वतन्त्रतापूर्वक व्यक्त करना चाहिये। क्योंकि तुम्हारी परीक्षा से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। और तुम्हारे द्वारा व्यक्त किया गया मत पूर्ण रूप से गुप्त रखा जायेगा।

5- प्रत्येक कथन के सामने के पाँचों खानों में से किसी न किसी खाने में सही [✓] का निशान अवश्य लगाओ। किसी भी कथन के सामने बिना सही [✓] का निशान लगाये मत छोड़ो।

6- इसके लिये कोई निर्धारित समय नहीं है, परन्तु जल्दी से जल्दी पूरा करके पुस्तिका लौटा दो।

7- इस उत्तर-पुस्तिका के सभी कथन तीन खण्डों में बँटे हुये हैं। जब एक खण्ड पूरा हो जाय तब दूसरा शुरू करो।

खण्ड - 1
सामाजिक दृष्टिकोण

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
1- समाज का नेतृत्व करने वाले लोगों में विश्वास एवं रुचि नहीं है।					
2- सामाजिक व्यवस्था से हमारी शान्ति व सुरक्षा बनी रहती है।					
3- समाज से विद्रोह करके व्यक्ति उन्नति नहीं कर सकता है।					
4- हमारी सामाजिक व्यवस्था में कमजोर वर्ग के साथ पूर्ण न्याय नहीं होता है।					
5- सामाजिक संगठन से मनुष्य को बड़े-बड़े कार्य करने का प्रोत्साहन मिलता है।					
6- व्यक्ति के विकास के लिये समाज की आवश्यकता नहीं है।					
7- अधिक सामाजिक होना व्यर्थ की परेशानी मोल लेना है।					
8- सामाजिक हित के लिए कुछ भी त्यागना मुझे पसन्द नहीं है।					
9- समाज के नियम मनुष्य की भलाई के लिये बनाये जाते हैं। अतः इनका पालन अवश्य करना चाहिये।					
10- सामाजिक समारोहों में भाग लेना मुझे पसन्द नहीं है।					
11- सामाजिक संस्थायें व्यक्ति के [illegible]					

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
12- हमारा समाज शक्तिशाली लोगों के प्रभाव में है, इसमें गरीबों के लिये कोई स्थान नहीं है।					
13- सामाजिक रीति रिवाज का निर्वाह करने से व्यक्ति को अनावश्यक परेशानी उठानी पड़ती है।					
14- सामाजिक नियमों का पालन करने के लिये हम बाध्य नहीं है।					
15- सामाजिक सेवा करने से मुझको संतोष की अनुभूति होती है।					
16- समाज के प्रतिबन्ध इतने कठिन है कि इनके कारण व्यक्ति की स्वतन्त्रता छिन जाती है।					
17- यह कहना कि समाज के हित में हमारा भी हित है, सत्य नहीं है।					
18- लोगों में घूमना, फिरना एवं भाषण देना मुझे अच्छा लगता है।					
19- व्यक्ति की समृद्धि एवं प्रगति में समाज का कोई योगदान नहीं रहता है।					
20- सामाजिक व्यवस्था कमजोरों को भी स्वतन्त्रतापूर्वक जीने का अधिकार प्रदान करती है।					
21- हमारी सामाजिक संस्थायें अपने हित के सामने राष्ट्र के हित को महत्व नहीं देती है।					
22- समाज एक ऐसा संगठन है जो मनुष्य को सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाता है।					
23- समाज के सदस्यों से सहयोग करना हमारे लिये आवश्यक नहीं है।					

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
24- सामाजिक संगठन समाज की सेवा कम करके लोगों को गुमराह करते हैं					
25- सामाजिक नियम व परम्परा को तोड़ने में मुझे कोई हिचक नहीं है।					
26- समाज के कल्याणकारी कार्यों में हमें सहयोग करना चाहिये।					
27- हमारी सामाजिक व्यवस्था छुआछूत, ऊँच-नीच वर्ग, भेद आदि बुराइयों के लिये उत्तरदायी नहीं है।					
28- सामाजिक रीति रिवाजों को मनाने में हमें प्रसन्नता होती है।					
29- यह आवश्यक नहीं कि समाज के कल्याण से व्यक्ति का भी भला हो					
30- सहयोग, परोपकार, दया, प्रेम आदि उच्च गुणों का विकास समाज में ही होता है।					
31- आज की सामाजिक व्यवस्था में लगन व ईमानदारी से काम करना कठिन है।					
32- सामाजिक नियम व परम्पराओं का पालन करना व्यर्थ है।					
33- सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करना आवश्यक नहीं है।					
34- सामाजिक संस्थाओं का संचालन अच्छे लोगों द्वारा नहीं किया जाता है। अतः हमें सामाजिक क्रियाकलापों में भाग नहीं लेना चाहिये।					
35- समाज कमजोरों को दबाता है और शक्तिशाली की सहायता करता है।					
36- सामाजिक संस्थायें समाज के विकास में बाधक होती हैं।					
37- यदि सामाजिक नियमों से व्यक्तिगत लाभ न हो तो उसका पालन नहीं करना चाहिये।					

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
38- समाज की उन्नति से व्यक्ति की अपनी उन्नति हो सकती है ।					
39- समाज के हित के आगे हमें अपने हित को महत्व नहीं देना चाहिये ।					
40- समाज में भलाई की अपेक्षा बुराई अधिक पनपती है ।					
41- सामाजिक मान्यतायें एवं प्रथायें व्यक्ति के ऊपर अनावश्यक प्रतिबन्ध हैं ।					
42- सामाजिक रीति-रिवाजों एवं अन्ध-विश्वासों से ग्रस्त होने के कारण हम विवेक से काम नहीं ले पाते हैं ।					

खण्ड - 2

धर्म के प्रति दृष्टिकोण

	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
1- धर्म ईर्ष्या, द्वेष एवं कलह करना सिखाता है ।					
2- हमें अपने सुख व शान्ति के लिये ईश्वर में विश्वास करना आवश्यक नहीं है ।					
3- धार्मिक मेले एवं समारोह आपसी भाई-चारे की भावना के विकास में बाधक होते है ।					
4- धार्मिक कृत्यों से मनुष्य का मन शुद्ध होता है ।					
5- ईश्वर के भय से हम बुरे कार्य से बचते है ।					
6- ईश्वर भक्त बनने की अपेक्षा मैं नास्तिक [ईश्वर में विश्वास न करने वाला] बनना पसन्द करता हूँ ।					
7- धर्म के ही सहारे स्वर्ग की प्राप्ति की जा सकती है ।					
8- विभिन्न धार्मिक संगठन धर्म के नाम पर आपस में झगड़ा ही करते है ।					
9- धर्म के अभाव में मनुष्य पशु हो जायेगा ।					
10- जीवन में उन्नति धार्मिक कार्यों से ही सम्भव है ।					
11- धर्म विश्व-बन्धुत्व की भावना में बाधक है ।					
12- ईश्वर में जो विश्वास नहीं करता है वह सुखी नहीं रहता है ।					
13- धर्म से ऊँच-नीच की भावना फैलती है ।					
14- मन्दिर मस्जिद जाने से ईश्वर में विश्वास बढ़ता है ।					
15- धर्म के कारण साम्प्रदायिक दंगे होते रहते है । अतः धर्म कोई अच्छी चीज नहीं है ।					

	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
16- पूजा पाठ न करने वालों की अपेक्षा पूजा पाठ करने वाले अधिकतर ढोंगी एवं दुराचारी होते हैं।					
17- धर्म मनुष्य के लिये अभिशाप है।					
18- धार्मिक स्थलों की यात्रा से मन को शान्ति मिलती है।					
19- धर्म मनुष्य को डरपोक व कायर बनाता है।					
20- जीवों की उत्पत्ति स्वयं हुयी है। इनकी उत्पत्ति में ईश्वर का कोई हाथ नहीं है।					
21- धर्म ढोंग एवं आडम्बर के अतिरिक्त कुछ नहीं है।					
22- यह सोचना कि हमारे कार्यों के अनुसार ही हमें फल मिलता है, सही नहीं है।					
23- ईश्वर की उपासना से सुख व शान्ति मिलती है।					
24- धर्म को न मानने वाले अधिक साहसी व उद्यमी होते हैं।					
25- धार्मिक संगठनों एवं संस्थाओं द्वारा बुराई पनपती है।					
26- मानवता की प्रगति हेतु धर्म आवश्यक है।					
27- वैज्ञानिक प्रगति में धर्म बाधक है					
28- सुखी व शान्तिमय जीवन के लिये धर्म का पालन आवश्यक है					
29- धर्म बुरे कार्य करने के लिये बढ़ावा देता है।					
30- धर्म बुद्धि एवं विवेक पर पर्दा डाल देता है।					
31- धर्म से समाज एवं मानवता का कल्याण होता है।					

	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
32- ईश्वर नाम की दुनिया में कोई चीज नहीं है ।					
33- कमजोर ही धर्म का सहारा लेते हैं ।					
34- बुरे कार्य करने वाले को नर्क की प्राप्ति होती है ।					
35- सभ्यता के विकास में धर्म का कोई योगदान नहीं है ।					
36- धर्म हमें संतोष करना सिखाता है ।					
37- ईश्वर की सत्ता काल्पनिक है । इसलिये उसकी उपासना करना व्यर्थ है ।					
38- स्त्री धर्मनिरपेक्ष होती है ।					
39- सभी को धर्म का पालन करना चाहिये क्योंकि धर्म के पालन से ही व्यक्ति का चरित्र निर्माण होता है ।					
40- धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करना समय को बर्बाद करना है ।					
41- ईश्वर एवं धर्म में विश्वास करना बुद्धिमानी नहीं है ।					
42- मनुष्य में अच्छे गुणों के विकास के लिये धर्म आवश्यक नहीं है ।					
43- धर्म के नाम पर समाज का शोषण होता है ।					
44- स्वर्ग एवं नर्क एक कल्पना है । मृत्यु के बाद कुछ नहीं है ।					
45-________________					

खण्ड-3

ईमानदारी के प्रति दृष्टिकोण

	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
1- "जो तोकू काँटा बुवै ताहि बोई तू फूल" की नीति का पालन करना चाहिये ।					
2- यह कहना कि ईमानदारी से ही व्यक्ति जीवन में सफल हो सकता है, सही नहीं है ।					
3- बड़ों के आदेशों का पालन करने में यदि कोई लाभ न होता हो तो उसका पालन करना बेकार है ।					
4- दूसरों की असावधानी से यदि थोड़ी सी हानि हो जाय तो भी उपेक्षा नहीं करना चाहिये ।					
5- यद्यपि बेईमानी करके धनी होने वाले समाज में बड़ी इज्जत पाते है, फिर भी बेईमानी करने के कारण उनका मन अशान्त रहता है ।					
6- ईंट का जवाब पत्थर से देना अच्छा नहीं होता है ।					
7- यदि साथ काम करने वाले अधिकतर लोग नाजायज लाभ उठा रहे हों तो मुझे भी उस तरह का लाभ उठाने में संकोच नहीं करना चाहिये ।					
8- यदि दूसरों की भलाई करने में अपना नुकसान भी हो जाय, तो भी ऐसा करने से अपने मन को शान्ति ही मिलती है ।					
9- यह देखा जाता है कि ईमानदार पीछे रह जाता है । अतः यह विचार कि ईमानदारी से उन्नति नहीं की जा सकती है, सही है ।					
10- छोटे लाभ के लिये नहीं किन्तु बड़े लाभ के लिये झूठ बोलना अनुचित नहीं है ।					

	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
11- अपनी पढ़ाई का नुकसान करके मित्रों की मदद करना मुझे ठीक नहीं लगता है।					
12- जीवन के महत्वपूर्ण एवं लाभकारी कार्य छोड़कर माँ बाप की सेवा करने से जीवन में उन्नति नहीं की जा सकती है।					
13- अपनी भलाई के लिए दूसरों का बुरा करना अनुचित है।					
14- दूसरों का भला करने से पहले अपनी भलाई करने की कोशिश करनी चाहिये।					
15- स्वयं भूखे रहकर भी किसी भूखे व्यक्ति को खाना खिलाने में मुझे आनन्द आता है।					
16- बड़े से बड़ा नुकसान होने पर भी सत्य का रास्ता नहीं छोड़ना चाहिये।					
17- अध्यापक चाहे जैसा भी हो उसका आदर करना चाहिये।					
18- विपत्ति में पड़े व्यक्ति की सहायता करने के लिये अपने को कठिनाई में फँसाना ठीक नहीं है।					
19- अपने जेब खर्च के पैसे से गरीब लड़कों की मदद कर देना मुझे अच्छा लगता है।					
20- दूसरों की भलाई करने में अपनी कमायी खोना उचित नहीं है					
21- परिश्रम करने की अपेक्षा अधिक से अधिक धन कमाना मैं अधिक उपयुक्त समझता हूँ।					
22- दूसरों की [illegible]					
23- दूसरों की समस्याओं को ठीक करने के लिये अपने अत्यन्त आवश्यक काम को भी छोड़ देना चाहिये।					
24- धन अधिक कमाने के लिए कोई भी रास्ता अपनाना उचित है।					

	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
25- ईमानदार की अपेक्षा बेईमान अधिक आराम की जिन्दगी बिताते हैं। इसलिये ईमानदार होना ठीक नहीं है।					
26- चाहे विद्यालय पहुँचने में मुझे ही देर हो जाय परन्तु रास्ते में भटके अन्य व्यक्ति को घर पहुँचा देना मैं उत्तम समझता हूँ।					
27- अधिकतर लोग बिना परिश्रम किये अधिक लाभ उठा लेते हैं। अतः आज के युग में परिश्रम व लगन से काम करना बेवकूफी है।					
28- अपने आवश्यक खर्च में कमी करके भी अपनी आमदनी का कुछ भाग दीन दुखियों को दान कर देना चाहिये।					
29- मित्र भला हो या बुरा उसकी आलोचना नहीं करनी चाहिये।					
30- सदा सत्य की ही विजय होती है।					
31- थोड़ा झूठ बोलकर अपना कार्य निकालना अनुचित नहीं है।					
32- चोरी करने की अपेक्षा भूखों मर जाना मैं अच्छा समझता हूँ।					
33- दूसरों को पीड़ा पहुँचाना यद्यपि नीच कार्य है तो भी अपनी भलाई के लिये किया जा सकता है।					
34- जन कल्याण के लिये भी झूठ बोलना उचित नहीं है।					
35- परोपकार करके उसकी चर्चा करना ओछापन है।					
36- व्यक्तिगत सुख सुविधा त्याग कर परिवार के सदस्यों की सहायता नहीं करनी चाहिये।					

	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
37- अनुचित कहलाने वाले पड़ोसियों के साथ भी अच्छा व्यवहार करना चाहिये।					
38- निन्दा करके भी लोगों का सुधार किया जा सकता है।					
39- आज के युग में बिना कुछ बेईमानी किये सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करना असम्भव है।					
40- गलत रास्ता अपना कर बड़े से बड़ा अधिक लाभ उठाना भी मैं अनुचित समझता हूँ।					
41- अपने कपड़े देकर जाड़े से ठिठुरते हुये दुखी व्यक्ति की सहायता करना मैं ठीक नहीं समझता हूँ।					
42- यदि व्यक्ति जीवन में आगे बढ़ना चाहता है तो उसे सदा अपने साथी को गिराने की चिन्ता नहीं करनी चाहिये।					

अभिवृत्ति-मान (ATTITUDE SCALE)

(Prepared by Hari Bansh Singh)

XIII

APPENDIX - II

नाम ....

पिता का नाम ....

विद्यालय .... कक्षा व वर्ग ....

घर का पता ....

जन्मतिथि .... दिनांक ....

प्राप्तांक

प्रथम खण्ड	द्वितीय खण्ड	तृतीय खण्ड	योग

निर्देश

(१) इस पुस्तिका में कुछ कथन दिये गये हैं। इनके बारे में तुम्हें अपना मत व्यक्त करना है।

(२) प्रत्येक कथन के सामने (१) पूर्णतः सहमत (२) सहमत (३) अनिश्चित (४) असहमत (५) पूर्णतः असहमत के लिये अलग-अलग पाँच खाने खिंचे हुये हैं। इनमें से किसी एक खाने में सही (√) का निशान लगाकर तुम्हें अपना मत व्यक्त करना है। यदि तुम किसी कथन से पूर्णतः सहमत अर्थात् शतप्रतिशत सहमत हो तो उस कथन के सामने पूर्णतः सहमत के खाने में सही (√) का निशान लगा दो। इसी प्रकार केवल सहमत अर्थात् शतप्रतिशत सहमत न होकर कुछ हद तक सहमत होने पर सहमत के खाने में सही (√) का निशान लगा दो। अनिश्चित अर्थात् कथन के बारे में कोई निश्चित राय न होने पर अनिश्चित के खाने में सही (√) का निशान लगा दो। यदि कथन से असहमत अर्थात् शतप्रतिशत असहमत न होकर कुछ हद तक असहमत हो तो असहमत के खाने में सही (√) का निशान लगा दो। और यदि कथन से पूर्णतः असहमत अर्थात् शतप्रतिशत असहमत हो तो पूर्णतः असहमत के खाने में सही का निशान लगा दो।

(३) हर व्यक्ति अलग-अलग अपने तरीके से सोचता-विचारता है। अतः किसी विचार से सहमत या असहमत होने में सही या गलत होने का प्रश्न नहीं उठता है।

(४) तुम्हें अपना मत निर्भीक होकर, स्वतन्त्रता पूर्वक व्यक्त करना चाहिये; क्योंकि तुम्हारी परीक्षा से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है एवं तुम्हारे द्वारा व्यक्त किया गया मत पूर्ण रूप से गुप्त रखा जायगा।

(५) प्रत्येक कथन के सामने के पाँच खानों में से किसी न किसी खाने में सही (√) का निशान अवश्य लगाओ। किसी भी कथन के सामने बिना सही (√) का निशान लगाये मत छोड़ो।

(६) इसके लिये कोई निर्धारित समय नहीं है; परन्तु जल्दी से जल्दी पूरा करके पुस्तिका लौटा दो।

(७) इस उत्तर पुस्तिका के सभी कथन तीन खण्डों में बँटे हुये हैं। जब एक खण्ड पूरा हो जाय तब दूसरा खण्ड शुरू करो।

XIV

प्रथम खण्ड

सामाजिक दृष्टिकोंण
(SOCIAL ATTITUDE)

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
	१	२	३	४	५
१. समाज का नेतृत्व करने वाले लोगों में मेरा विश्वास एवं रुचि नहीं है।					
२. समाज से विद्रोह करके व्यक्ति उन्नति नहीं कर सकता है।					
३. व्यक्ति के विकास के लिए मैं समाज को आवश्यक नहीं समझता हूँ।					
४. अधिक सामाजिक होना व्यर्थ की परेशानी मोल लेना है।					
५. सामाजिक हित के लिये कुछ भी त्यागना मुझे पसन्द नहीं है।					
६. सामाजिक समारोहों में भाग लेना मुझे पसन्द नहीं है।					
७. हमारा समाज शक्तिशाली लोगों के प्रभाव में है, इसमें गरीबों के लिये कोई स्थान नहीं है।					
८. सामाजिक रीतिरिवाज का निर्वाह करने में व्यक्ति को अनावश्यक परेशानी उठानी पड़ती है।					
९. सामाजिक सेवा करने में मुझको संतोष की अनुभूति होती है।					
१०. समाज के प्रतिबन्ध इतने जटिल हैं कि उनके कारण व्यक्ति की स्वतन्त्रता छिन जाती है।					
११. यह कहना कि समाज के हित में हमारा भी हित है, सत्य नहीं।					
१२. लोगों में घमना फिरना एवं भाषण देना मुझे अच्छा लगता है।					
१३. व्यक्ति की समृद्धि एवं सुरक्षा के लिये समाज कुछ नहीं करता है।					
१४. समाज के सदस्यों से सहयोग करना हमारे लिये आवश्यक नहीं है।					
१५. सामाजिक संगठन समाज की सेवा न करके					

XV

सामाजिक दृष्टिकोण
(SOCIAL ATTITUDE)

	पूर्णतः सहमत १	सहमत २	अनिश्चित ३	असहमत ४	पूर्णतः असहमत ५
१६. सामाजिक नियम व परम्परा को तोड़ने में मुझे कोई हिचक नहीं है।					
१७. हमारी सामाजिक व्यवस्था छुआ-छूत, ऊँच-नीच, वर्ग-द्वेष आदि बुराइयों के लिये उत्तरदायी नहीं हैं।					
१८. सामाजिक रीति-रिवाजों को मनाने में हमें प्रसन्नता होती है।					
१९. यह आवश्यक नहीं कि समाज की उन्नति से व्यक्ति का भी भला हो।					
२०. आज की सामाजिक व्यवस्था में लगन व ईमानदारी से काम करना कठिन है।					
२१. सामाजिक नियम व परम्पराओं का पालन करना व्यर्थ है।					
२२. सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करना मैं आवश्यक नहीं समझता हूँ।					
२३. सामाजिक संस्थाओं का संचालन अच्छे लोगों द्वारा नहीं किया जाता है। अतः हमें सामाजिक कार्यों में भाग नहीं लेना चाहिये।					
२४. समाज कमजोरों को दबाता है, और शक्तिशाली की सहायता करता है।					
२५. सामाजिक संस्थायें समाज के विकास में बाधक होती हैं।					
२६. यदि सामाजिक नियमों से व्यक्तिगत लाभ न हो तो उसका पालन नहीं करना चाहिये।					
२७. समाज के हित के आगे हमें अपने हित को महत्व नहीं देना चाहिये।					
२८. समाज में भलाई की अपेक्षा बुराई अधिक पनपती है।					
२९ सामाजिक मान्यतायें एवं प्रथायें व्यक्ति के ऊपर अनावश्यक प्रतिबन्ध हैं।					
३०. सामाजिक रीति-रिवाजों एवं अन्धविश्वासों से ग्रस्त होने के कारण हम बुद्धि व विवेक से काम नहीं ले पाते हैं।					

VX XVI

द्वितीय भाग

धर्म के प्रति दृष्टिकोण
(ATTITUDE TOWARDS RELIGION)

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
	१	२	३	४	५
१. धर्म ईर्ष्या, द्वेष एवं कलह करना सिखाता है।					
२. अपने सुख व शान्ति के लिए ईश्वर में विश्वास करना आवश्यक नहीं है।					
३. धार्मिक कार्यों से मनुष्य का मन शुद्ध होता है।					
४. धार्मिक मेले व समारोह आपसी भाई-चारे की भावना के विकास में बाधक होते हैं।					
५. ईश्वर के भय से हम बुरे कार्य से बचते हैं।					
६. ईश्वर-भक्त बनने की अपेक्षा मैं नास्तिक (ईश्वर में विश्वास न करने वाला) बनना पसन्द करता हूँ।					
७. विभिन्न धार्मिक संगठन धर्म के नाम पर आपस में झगड़ा ही करते हैं।					
८. धर्म के अभाव में मनुष्य पशु हो जायगा।					
९. जीवन में प्रगति धार्मिक कार्यों से ही सम्भव है।					
१०. धर्म विश्व-बन्धुत्व की भावना के विकास में बाधक है।					
११. ईश्वर में जो विश्वास नहीं करता है वह सुखी नहीं रहता है।					
१२. धर्म से ऊँच-नीच की भावना फैलती है।					
१३. धर्म के कारण साम्प्रदायिक दंगे होते रहते हैं। अतः धर्म कोई अच्छी चीज नहीं है।					
१४. पूजा-पाठ न करने वालों की अपेक्षा पूजा-पाठ करने वाले अधिकतर ढोंगी एवं दुराचारी होते हैं।					
१५. धर्म मनुष्य के लिए अभिशाप है।					
१६. धर्म मनुष्य को डरपोक व काहिल बनाता है।					
१७. जीवों की उत्पत्ति (पैदाइश) स्वयं हुई है। उनकी उत्पत्ति (पैदाइश) में ईश्वर का कोई हाथ नहीं है।					
१८. धर्म ढोंग एवं आडम्बर के अतिरिक्त कुछ नहीं					

XVII

धर्म के प्रति दृष्टिकोण
(ATTITUDE TOWARDS RELIGION)

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
	१	२	३	४	५
१९. यह सोचना कि हमारे कर्मों के अनुसार ही हमें फल मिलता है; सहो नहीं है।					
२०. धर्म के न मानने वाले अधिकतर साहसी व उद्यमी होते हैं।					
२१. धार्मिक संगठनों एवं संस्थाओं द्वारा बुराई पनपती है।					
२२. मानवता की प्रगति के लिए धर्म आवश्यक है।					
२३. वैज्ञानिक प्रगति में धर्म बाधक है।					
२४. सुखी व शान्तिमय जीवन के लिए धर्म का पालन करना हमारे लिए आवश्यक है।					
२५. धर्म बुद्धि व विवेक पर पर्दा डाल देता है।					
२६. धर्म से समाज एवं मानवता का कल्याण होता है।					
२७. ईश्वर नाम की कोई चीज दुनियां में नहीं है।					
२८. कमजोर ही धर्म का सहारा लेते हैं।					
२९. सभ्यता के विकास में धर्म का कोई योगदान (सहायता) नहीं है।					
३०. ईश्वर की सत्ता काल्पनिक है। इस लिए उसकी उपासना करना व्यर्थ है।					
३१. धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करना समय को बर्बाद करना है।					
३०. ईश्वर एवं धर्म में विश्वास करना बुद्धिमानी नहीं है।					
३३. मनुष्य में अच्छे गुणों के विकास के लिए धर्म आवश्यक नहीं है।					
३४. धर्म के नाम पर समाज का शोषण होता है।					
३५. स्वर्ग एवं नर्क एक कल्पना है। मृत्यु के बाद कुछ नहीं है।					

XVIII

नैतिकता के प्रति दृष्टिकोण
(ATTITUDE TOWARDS MORALITY)

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
	१	२	३	४	५
१. "जो तोकू कांटा बुवै ताहि बोइ तू फूल" की नीति का पालन करना चाहिए।					
२. यह कहना कि ईमानदारी से ही व्यक्ति जीवन में सफल हो सकता है, सही नहीं है।					
३. बड़ों के आदेशों का पालन करने में यदि कोई लाभ न होता हो तो उसका पालन करना बेकार है।					
४. दूसरों की असावधानी से यदि जरा सी भी हानि हो जाय तो उसे क्षमा नहीं करना चाहिए।					
५. यद्यपि बेईमानी करके धनी होने वाले व्यक्ति समाज में काफी इज्जत पाते हैं लेकिन उनके जीवन में सदा दुख एवं अशान्ति बनी रहती है।					
६. ईंट का जवाब पत्थर से देना अच्छा नहीं होता है।					
७. यदि साथ काम करने वाले अधिकतर लोग नाजायज लाभ उठा रहे हों तो हमें भी उस तरह का लाभ उठाने में नहीं हिचकना चाहिए।					
८. यदि दूसरों की भलाई करने में अपना नुकसान भी हो जाय तो भी वैसा करने में अपने मन को शान्ति ही मिलती है।					
९. यह देखा जाता है कि ईमानदार पीछे रह जाता है और बेईमान आगे बढ़ जाता है। अतः यह विचार कि ईमानदारी से उन्नति नहीं की जा सकती है, सही है।					
१०. छोटे लाभ के लिए नहीं, किन्तु बड़े लाभ के लिए थोड़ा झूठ बोलना अनुचित नहीं है।					
११. अपनी पढ़ाई का नुकसान करके मित्रों की मदद करना मुझे ठीक नहीं लगता है।					
१२. जीवन के महत्वपूर्ण एवं लाभकारी कार्य छोड़कर मां-बाप की सेवा करने से जीवन में प्रगति नहीं की जा सकती है।					
१३. अपनी भलाई के लिए दूसरों का बुरा करना अनुचित है।					
१४. दूसरों का भला करने से पहले हमें अपनी भलाई करने की कोशिश करनी चाहिए।					
१५. स्वयं भूखे रहकर भी किसी भूखे व्यक्ति को खाना खिलाने में मुझे आनन्द आता है।					
१६. विपत्ति में फँसे व्यक्ति की सहायता करने के लिए अपने को कठिनाई में फँसाना मैं उचित नहीं समझता हूँ।					
१७. दूसरों की भलाई करके बदले में अपनी भलाई चाहना उचित नहीं है।					

XIX

नैतिकता के प्रति दृष्टिकोण
(ATTITUDE TOWARDS MORALITY)

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
	१	२	३	४	५
१९ दूसरों की भलाई के लिए अपने आवश्यक काम को भी छोड़ देना मैं उचित नहीं समझता हूँ।					
२०. धन-दौलत कमाने के लिए कोई भी रास्ता अपनाना उचित है।					
२१. ईमानदार की अपेक्षा बेईमान अधिक आराम की जिन्दगी बिताते हैं। इसलिए ईमानदार होना ठीक नहीं है।					
२२. चाहे विद्यालय पहुँचने में भले ही देर हो जाय; परन्तु रास्ते में भटके अन्धे व्यक्ति को घर पहुँचा देना मैं उत्तम समझता हूँ।					
२३. अधिकतर लोग बिना परिश्रम किये ही अधिक लाभ उठा लेते हैं। अतः आज के युग में परिश्रम व लगन से काम करना मैं बेवकूफी समझता हूँ।					
२४. मित्र भला हो या बुरा उसकी आलोचना नहीं करनी चाहिए।					
२५. थोड़ा झूठ बोलकर अपना काम निकालना अनुचित नहीं है।					
२६. चोरी करने की अपेक्षा भूखों मर जाना मैं अच्छा समझता हूँ।					
२७. दूसरों को पीड़ा पहुँचाना यद्यपि नीच कार्य है तो भी अपनी भलाई के लिए वैसा कार्य किया जा सकता है।					
२८. जन-कल्याण के लिए भी झूठ बोलना उचित नहीं है।					
२९. व्यक्तिगत सुख-सुविधा त्याग कर परिवार के सदस्यों की सहायता नहीं करनी चाहिए।					
३०. असुविधा पहुँचाने वाले पड़ोसियों के साथ भी अच्छा व्यवहार करना चाहिए।					
३१. निन्दा करके भी लोगों का सुधार किया जा सकता है।					
३२. आज के युग में बिना कुछ बेईमानी किये सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करना असम्भव है।					
३३. गलत रास्ता अपना कर बड़े से बड़ा लाभ उठाना भी मैं अनुचित समझता हूँ।					
३४. अपने कपड़े देकर जाड़े से ठिठुरते हुए दुखी व्यक्ति की सहायता करना मैं ठीक नहीं समझता हूँ।					
३५. यदि व्यक्ति जीवन में आगे बढ़ना चाहता है तो उसे सदा अपने वादों को निभाने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।					

अभिवृत्ति-मान **(ATTITUDE SCALE)**

(Prepared by Hari Bansh Singh)

APPENDIX-III XX

नाम ....

पिता का नाम ....

विद्यालय .... कक्षा व वर्ग ....

घर का पता ....

जन्मतिथि .... दिनांक ....

प्राप्तांक

प्रथम खण्ड	द्वितीय खण्ड	तृतीय खण्ड	योग

निर्देश

(१) इस पुस्तिका में कुछ कथन दिये गये हैं। इनके बारे में तुम्हें अपना मत व्यक्त करना है।

(२) प्रत्येक कथन के सामने (१) पूर्णतः सहमत (२) सहमत (३) अनिश्चित (४) असहमत (५) पूर्णतः असहमत के लिये अलग-अलग पाँच खाने खिंचे हुए हैं। इनमें से किसी एक खाने में सही (√) का निशान लगाकर तुम्हें अपना मत व्यक्त करना है। यदि तुम किसी कथन से पूर्णतः सहमत अर्थात् शतप्रतिशत सहमत हो तो उस कथन के सामने पूर्णतः सहमत के खाने में सही (√) का निशान लगा दो। इसी प्रकार केवल सहमत अर्थात् शतप्रतिशत सहमत न होकर कुछ हद तक सहमत होने पर सहमत के खाने में सही (√) का निशान लगा दो। अनिश्चित अर्थात् कथन के बारे में कोई निश्चित राय न होने पर अनिश्चित के खाने में सही (√) का निशान लगा दो। यदि कथन से असहमत अर्थात् शतप्रतिशत असहमत न होकर कुछ हद तक असहमत हो तो असहमत के खाने में सही (√) का निशान लगा दो। और यदि कथन से पूर्णतः असहमत अर्थात् शतप्रतिशत असहमत हो तो पूर्णतः असहमत के खाने में सही (√) का निशान लगा दो।

(३) हर व्यक्ति अपने तरीके से अलग-अलग सोचता-विचारता है। अतः किसी विचार से सहमत या असहमत होने में सही या गलत होने का प्रश्न नहीं उठता है।

(४) तुम्हें अपना मत निर्भीक होकर, स्वतन्त्रता पूर्वक व्यक्त करना चाहिये; क्योंकि तुम्हारी परीक्षा से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है, एवं तुम्हारे द्वारा व्यक्त किया गया मत पूर्ण रूप से गुप्त रखा जायगा।

(५) प्रत्येक कथन के सामने के पाँच खानों में से किसी किसी न खाने में सही (√) का निशान अवश्य लगाओ। किसी भी कथन के सामने बिना सही (√) का निशान लगाये मत छोड़ो।

(६) इस उत्तर पुस्तिका के सभी कथन तीन खण्डों में बँटे हुये हैं। जब एक खण्ड पूरा हो जाय तब दूसरा खण्ड शुरू करो।

(७) इसके लिये कोई निर्धारित समय नहीं है; परन्तु जल्दी से जल्दी पूरा करके पुस्तिका लौटा दो।

XXI

प्रथम खण्ड

समाज के प्रति दृष्टिकोण

(ATTITUDE TOWARDS SOCIETY)

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
	१	२	३	४	५
१. समाज से विद्रोह करके व्यक्ति उन्नति नहीं कर सकता है।					
२. सामाजिक हित के लिए कुछ भी त्यागना मुझे पसन्द है।					
३. सामाजिक समारोहों में भाग लेना मुझे पसन्द है।					
४. समाज के सदस्यों से सहयोग करना हमारे लिए आवश्यक है।					
५. सामाजिक नियमों व परम्पराओं को तोड़ने में मुझको बड़ी हिचक होती है।					
६. सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करना मैं आवश्यक समझता हूँ।					
७. यदि सामाजिक नियमों से व्यक्तिगत लाभ न हो तो भी उसका पालन करना चाहिये।					
८. सामाजिक मान्यतायें एवं प्रथायें व्यक्ति के ऊपर उचित प्रतिबन्ध हैं।					
९. समाज का नेतृत्व करने वाले लोगों में मेरा विश्वास एवं रुचि नहीं है।					
१०. व्यक्ति के विकास के लिए मैं समाज को आवश्यक नहीं समझता हूँ।					
११. अधिक सामाजिक होना व्यर्थ की परेशानी मोल लेना है।					
१२. हमारा समाज शक्तिशाली लोगों के प्रभाव में है, इसमें गरीबों के लिए कोई स्थान नहीं है।					

प्रथम खण्ड

XXII

समाज के प्रति दृष्टिकोण

(ATTITUDE TOWARDS SOCIETY)

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
	१	२	३	४	५
३. सामाजिक रीतिरिवाज का निर्वाह करने में व्यक्ति को अनावश्यक परेशानी उठानी पड़ती है ।					
४. यह कहना कि समाज के हित में हमारा भी हित है, सत्य नहीं है ।					
५. व्यक्ति की समृद्धि एवं सुरक्षा के लिए समाज कुछ नहीं करता है ।					
६. सामाजिक संगठन समाज की सेवा न करके लोगों को गुमराह करते हैं ।					
७. यह आवश्यक नहीं कि समाज की उन्नति से व्यक्ति का भी भला हो ।					
८. सामाजिक नियम व परम्पराओं का पालन करना व्यर्थ है ।					
९. सामाजिक संस्थाओं का संचालन अच्छे लोगों द्वारा नहीं किया जाता है । अतः हमें सामाजिक कार्यों में भाग नहीं लेना चाहिये ।					
१०. समाज कमजोरों को दबाता है और शक्तिशाली की सहायता करता है ।					

द्वितीय खण्ड

धर्म के प्रति दृष्टिकोण

(ATTITUDE TOWARDS RELIGION)

XXIII

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
	१	२	३	४	५
१ अपने सुख व शान्ति के लिए ईश्वर में विश्वास करना आवश्यक है।					
२ धार्मिक मेले व समारोह आपसी भाई-चारे की भावना के विकास में सहायक होते हैं।					
३ हमारे कर्मों के अनुसार ही हमें फल मिलता है।					
४ धर्म के मानने वाले अधिकतर साहसी व उद्यमी होते हैं।					
५ धर्म से समाज एवं मानवता का कल्याण होता है।					
६ ईश्वर एवं धर्म में विश्वास करना बुद्धिमानी है।					
७ मनुष्य में अच्छे गुणों के विकास के लिए धर्म आवश्यक है।					
८ धर्म विश्व-बन्धुत्व की भावना के विकास में सहायक होता है।					
९ धर्म ईर्ष्या, द्वेष एवं कलह करना सिखाता है।					
१० ईश्वर-भक्त बनने की अपेक्षा मैं नास्तिक (ईश्वर में विश्वास न करने वाला) बनना पसन्द करता हूँ।					
११ धर्म के कारण साम्प्रदायिक दंगे होते रहते हैं। अतः धर्म कोई अच्छी चीज नहीं है।					
१२ पूजा-पाठ न करने वालों की अपेक्षा पूजा-पाठ करने वाले अधिकतर ढोंगी एवं दुराचारी होते हैं।					

XXIV

द्वितीय खण्ड

धर्म के प्रति दृष्टिकोण

(ATTITUDE TOWARDS RELIGION)

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
	१	२	३	४	५
३ धर्म मनुष्य को डरपोक व काहिल बनाता है।					
४ जीवों की उत्पत्ति (पैदाइश) स्वयं हुई है। उनकी उत्पत्ति (पैदाइश) में ईश्वर का कोई हाथ नहीं है।					
५ धर्म ढोंग एवं आडम्बर के अतिरिक्त कुछ नहीं है।					
६ धार्मिक संगठनों एवं संस्थाओं द्वारा बुराई बढ़ती है।					
७ धर्म बुद्धि व विवेक पर पर्दा डाल देता है।					
८ सभ्यता के विकास में धर्म का कोई योगदान (सहयता) नहीं है।					
९ ईश्वर की सत्ता काल्पनिक है। अत: उसकी उपासना करना व्यर्थ है।					
० धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करना समय को बर्बाद करना है।					

XXV

नैतिकता [redacted] के प्रति दृष्टिकोण

(ATTITUDE TOWARDS MORALITY)

	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
	१	२	३	४	५
१. ईमानदारी से ही व्यक्ति जीवन में सफल हो सकता है ।					
२. बड़ों के आदेशों का पालन करने में यदि कोई लाभ न होता हो तो भी उसका पालन करना चाहिए ।					
३. यद्यपि बेईमानी करके धनी होने वाले व्यक्ति समाज में काफी इज्जत पाते हैं लेकिन उनके जीवन में सदा दुख व अशान्ति बनी रहती है ।					
४. यदि दूसरों की भलाई करने में अपना नुकसान भी हो जाय तो भी वैसा करने में अपने मन को शान्ति ही मिलती है ।					
५. विपत्ति में फसे व्यक्ति की सहायता करने के लिए अपने को कठिनाई में फँसाना भी मैं उचित समझता हूँ ।					
६. चोरी करने की अपेक्षा भूखों मर जाना मैं अच्छा समझता हूँ ।					
७. दूसरों को पीड़ा पहुँचाना अनुचित नीच कार्य है । अतः अपनी भलाई के लिए भी वैसा कार्य नहीं करना चाहिये ।					
८. व्यक्तिगत सुख-सुविधा त्याग कर भी परिवार के सदस्यों की सहायता करनी चाहिये ।					
९. गलत रास्ता अपना कर बड़े से बड़ा लाभ उठाना भी मैं अनुचित समझता हूँ ।					
१०. दूसरों की भलाई के लिए अपने आवश्यक काम को भी छोड़ देना मैं उचित समझता हूँ ।					
११. दूसरों की असावधानी से यदि जरा सी भी हानि हो जाय तो उसे क्षमा नहीं करना चाहिये ।					
१२. यदि साथ काम करने वाले अधिकतर लोग नाजायज फायदा उठा रहे हों तो हमें भी उस तरह का लाभ उठाने में नहीं हिचकना चाहिये ।					

XXVI

तृतीय खण्ड

नैतिकता [redacted] के प्रति दृष्टिकोण

(ATTITUDE TOWARDS MORALITY)

	पूर्णत सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
	१	२	३	४	५
१. यह देखा जाता है कि ईमानदार पीछे रह जाता है और बेईमान आगे बढ़ जाता है । अतः यह विचार कि ईमानदारी से उन्नति नहीं की जा सकती है, सही है ।					
२. जीवन के महत्वपूर्ण एवं लाभकारी कार्य छोड़ कर माँ-बाप की सेवा करने से जीवन में प्रगति नहीं की जा सकती है ।					
३. दूसरों का भला करने से पहले हमें अपनी भलाई करने की कोशिश करनी चाहिये ।					
४. चरित्रवान बनने के बदले अधिक से अधिक धन कमाना मैं ज्यादा अच्छा समझता हूँ ।					
५. ईमानदार की अपेक्षा बेईमान अधिक आराम की जिन्दगी बिताते हैं । इसलिए ईमानदार होना ठीक नहीं है ।					
६. अधिकतर लोग बिना परिश्रम किये ही अधिक लाभ उठा लेते हैं । अतः आज के युग में परिश्रम व लगन से काम करना मैं बेवकूफी समझता हूँ ।					
७. अपने कपड़े देकर जाड़े से ठिठुरते हुए दुखी व्यक्ति की सहायता करना मैं ठीक नहीं समझता हूँ ।					
८. यदि व्यक्ति जीवन में आगे बढ़ना चाहता है तो उसे सदा अपने वादों को निभाने की चिन्ता नहीं करनी चाहिये ।					